Self Respect

30-05-2014

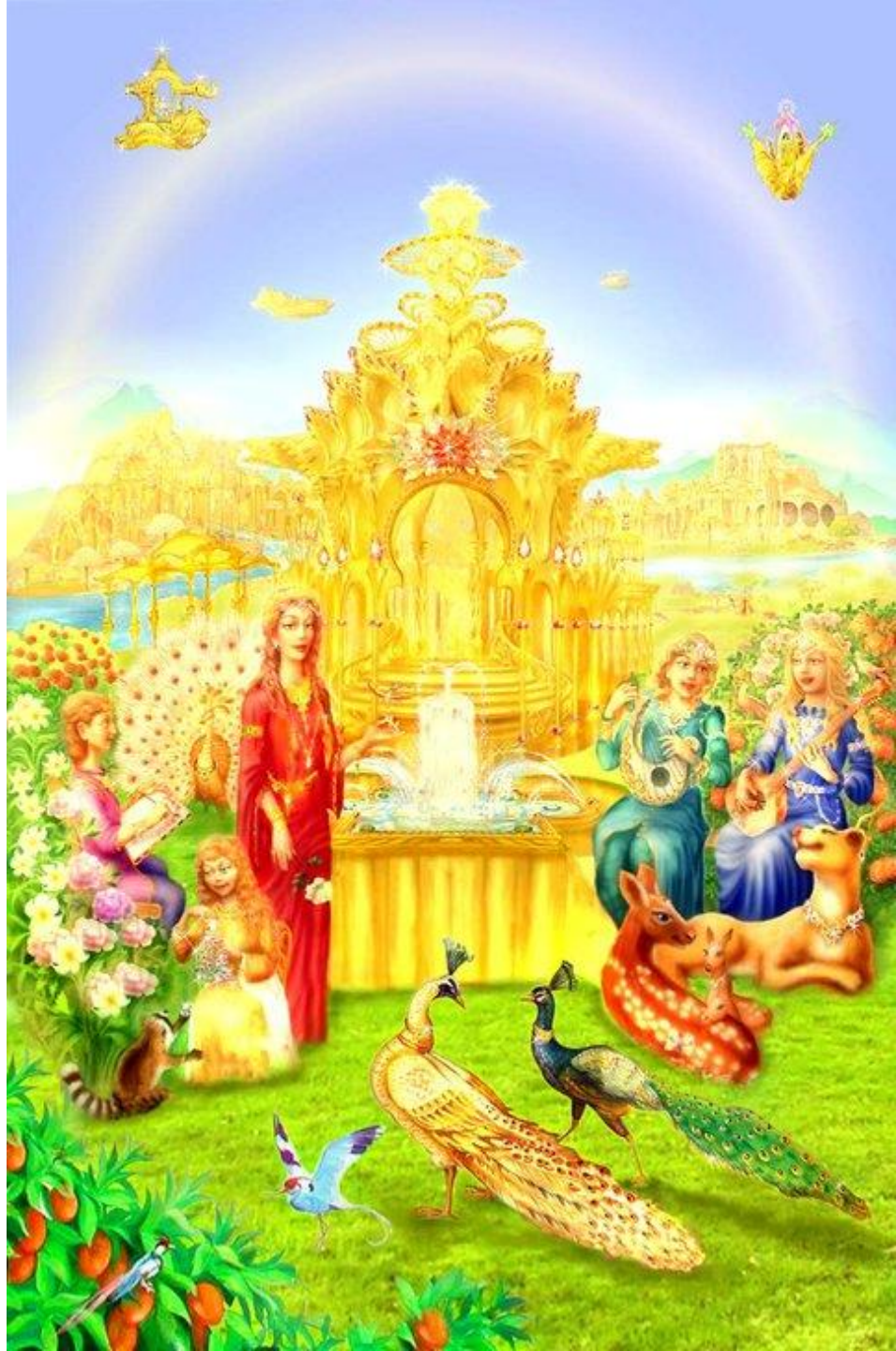

✓मीठे-मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चे यह तो जानते हैं कि हम अपनी दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं, इसमें राजायें भी हैं तो प्रजा भी हैं | पुरुषार्थ तो सब करते हैं जो जास्ती पुरुषार्थ करते हैं, वह जास्ती प्राइज़ लेते हैं | इसको दैवी बगीचा कहो वा राजधानी कहो | अभी यह है कलियुगी बगीचा अथवा काँटों का जंगल |

✓दैवी झाड़ की स्थापना हो रही है अथवा फूलों के बगीचे की स्थापना हो रही है कल्प पहले मिसल | आहिस्ते-आहिस्ते मीठे खुशबूदार भी बन रहे हैं – नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार |

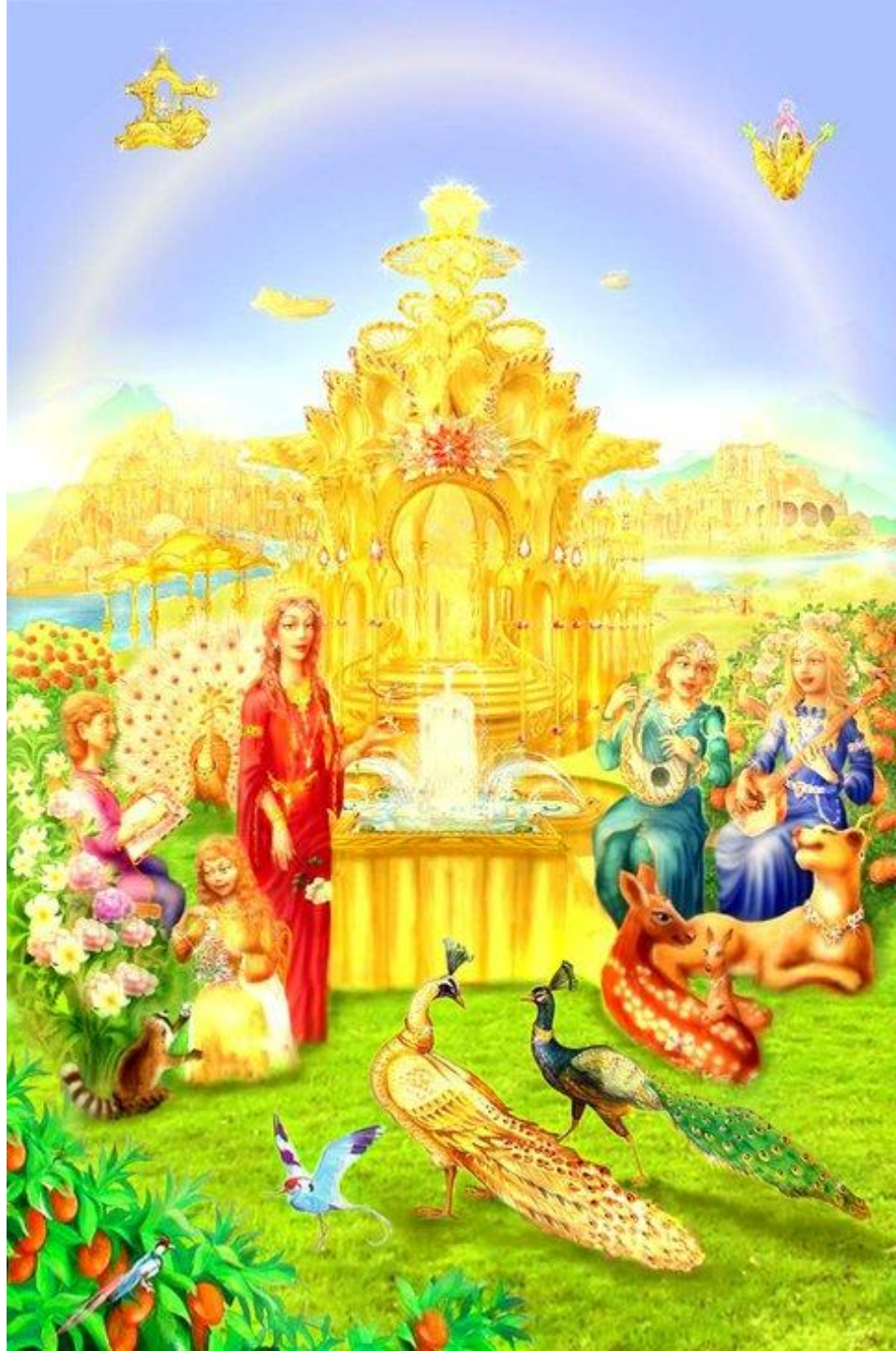

✓यह तो ज़रूर समझते हो बाबा हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं | यह बच्चों को निश्चय है ज़रूर | बेहद का बाबा हमको बेहद का मालिक बना रहे हैं | मालिक बनने में ख़ुशी भी बहुत होती है |

✓सम्पूर्ण तो कोई बने नहीं हैं | हाँ, बनना ज़रूर है | कल्प-कल्प बने हैं, इसमें कोई संशय नहीं | परन्तु इस समय खामी है |

- ✓जड़ हीरे में फ्लो होगा तो वह निकाल थोड़ेही सकेंगे | तुम तो चैतन्य हो | तुम इस फ्लो को निकाल सकते हो | तुम कौड़ी से हीरे जैसा बनते हो | तुम अपने को अच्छी रीति जानते हो |
- ✓अभी तुम हीरे बन रहे हो | यह जवाहरात की दुकान है | तुम हर एक जौहरी हो | यह बातें दूसरा कोई भी जानता नहीं |
- ✓तुम बच्चे जानते हो – हर एक के दिल में है, हम विश्व के मालिक बन रहे हैं – पुरुषार्थ अनुसार | जिन्हों को ऊँचा पद मिला है, उन्हों ने ज़रूर पुरुषार्थ किया है | हैं तो तुम्हारे में से ही ना | तुम बच्चों को ही इतना पुरुषार्थ करना है इसलिए बाबा एक-एक बच्चे को देखते रहते हैं |

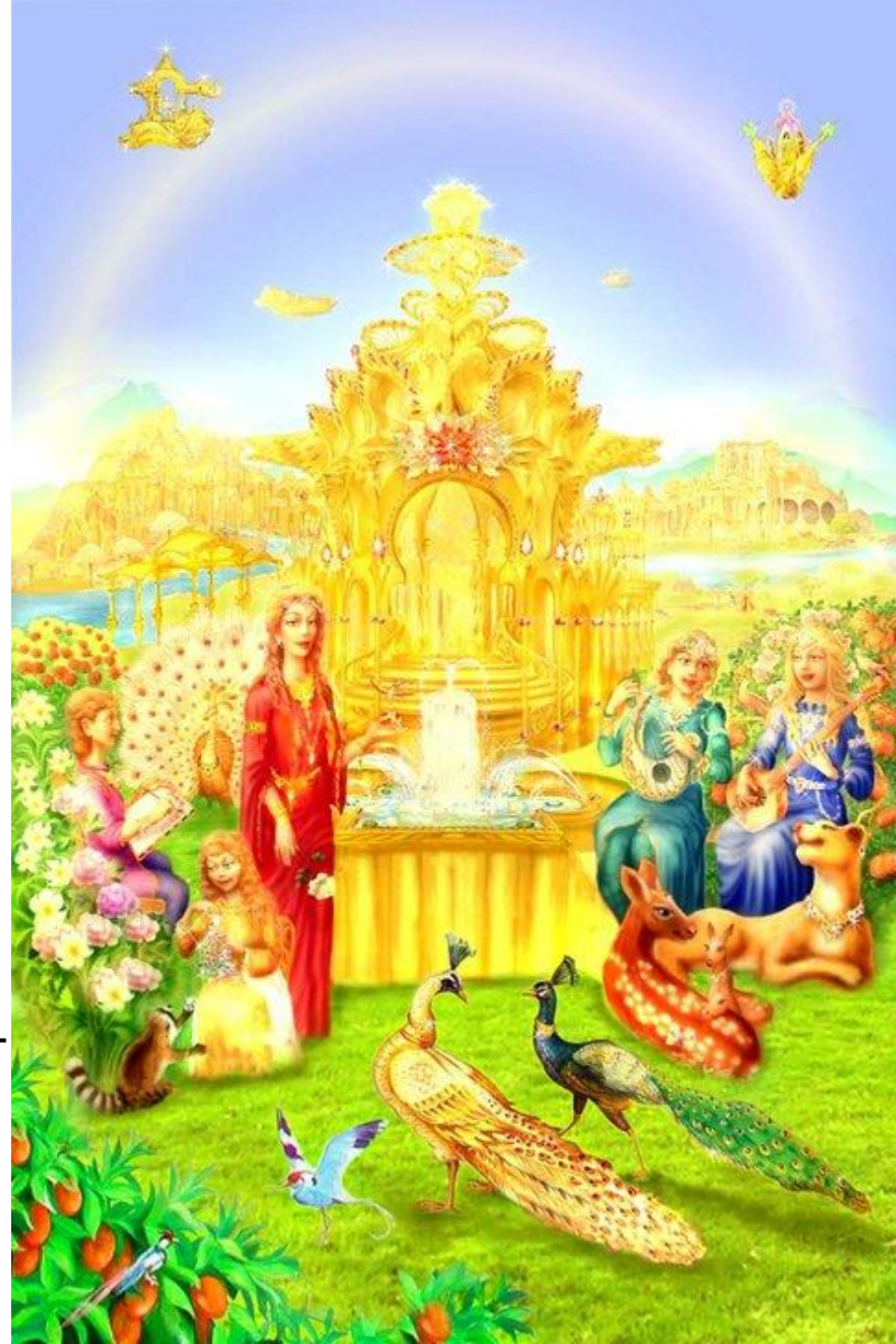

✓इन आँखों से देखने वाली चीज़ कोई भी सामने न आये, ऐसी अवस्था जमानी है | हमारी बुद्धि में सिवाए एक बाप के और शान्तिधाम के, कोई भी वस्तु याद न आये | कुछ भी साथ नहीं ले जाना है |बाप कहते हैं तुम्हारी अवस्था ऐसी पक्की हो, जो शरीर छूटने समय अन्त में कोई भी याद न आये|

✓कोई-कोई पत्थर तो बहुत वैल्युबुल होते हैं | माणिक भी वैल्युबुल होते हैं | बाप अपने से भी बच्चों की वैल्यु ऊँच करते रहते हैं |

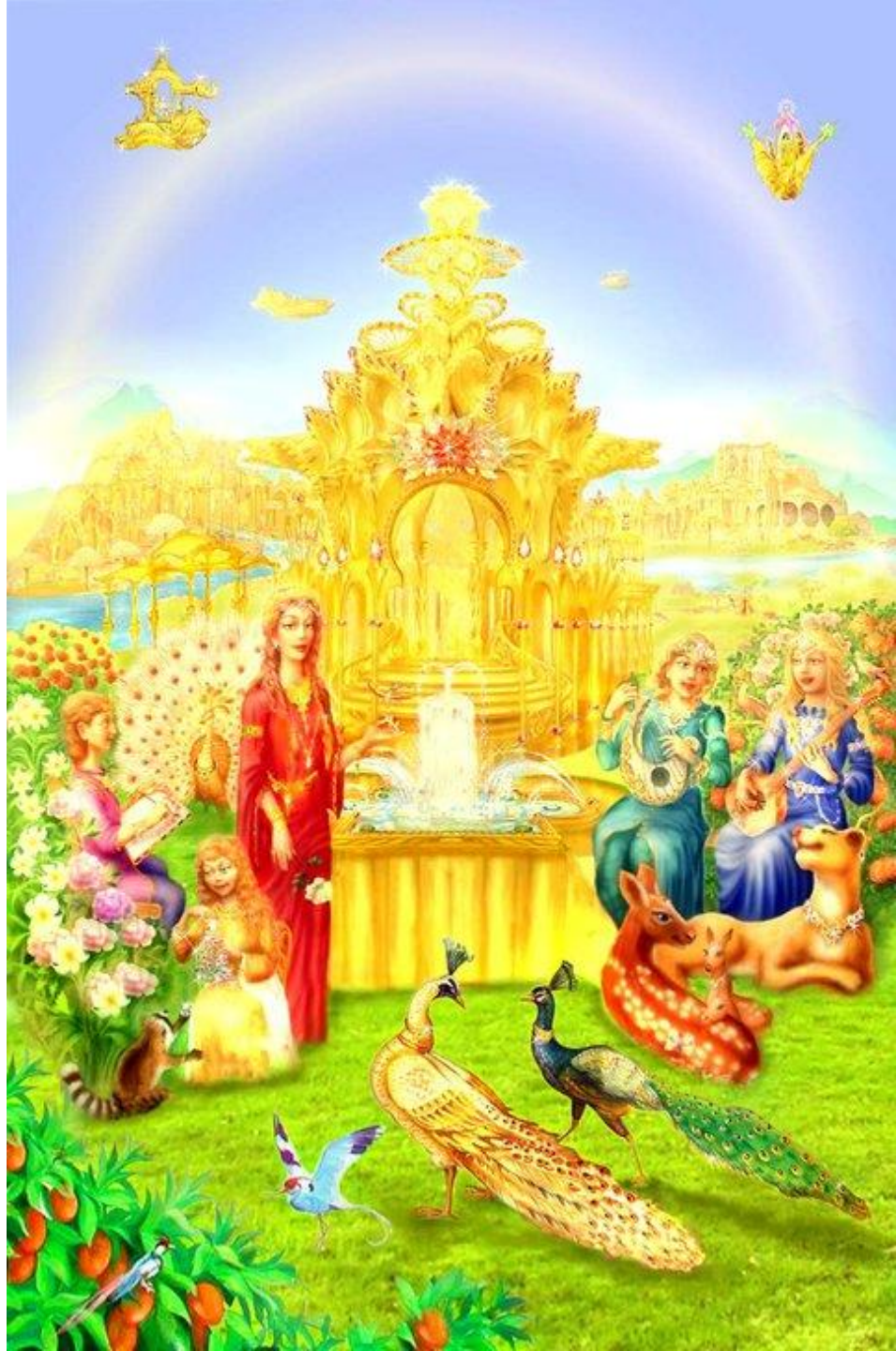

✓एक लवली बाप से ही योग रखना है | उनसे सब कुछ मिल जाता है | योग से ही तुम लवली बनते हो | लवली आत्मा बनती है | बाप लवली प्योर है ना | आत्मा को लवली प्योर बनाने के लिए बाप कहते हैं – बच्चे, जितना मुझे याद करेंगे तुम अथाह लवली बनेंगे | तुम इतने लवली बनते हो जो तुम देवी-देवताओं की अब तक पूजा हो रही है | बहुत लवली बनते हो ना | आधाकल्प तुम राज्य करते हो और फिर आधाकल्प तुम ही पूजे जाते हो | तुम ख़ुद ही पुजारी बन अपने चित्रों को पूजते हो | तुम हो सबसे लवली बनने वाले, परन्तु जब लवली बाप को अच्छी रीति याद करेंगे तब ही लवली बनेंगे |

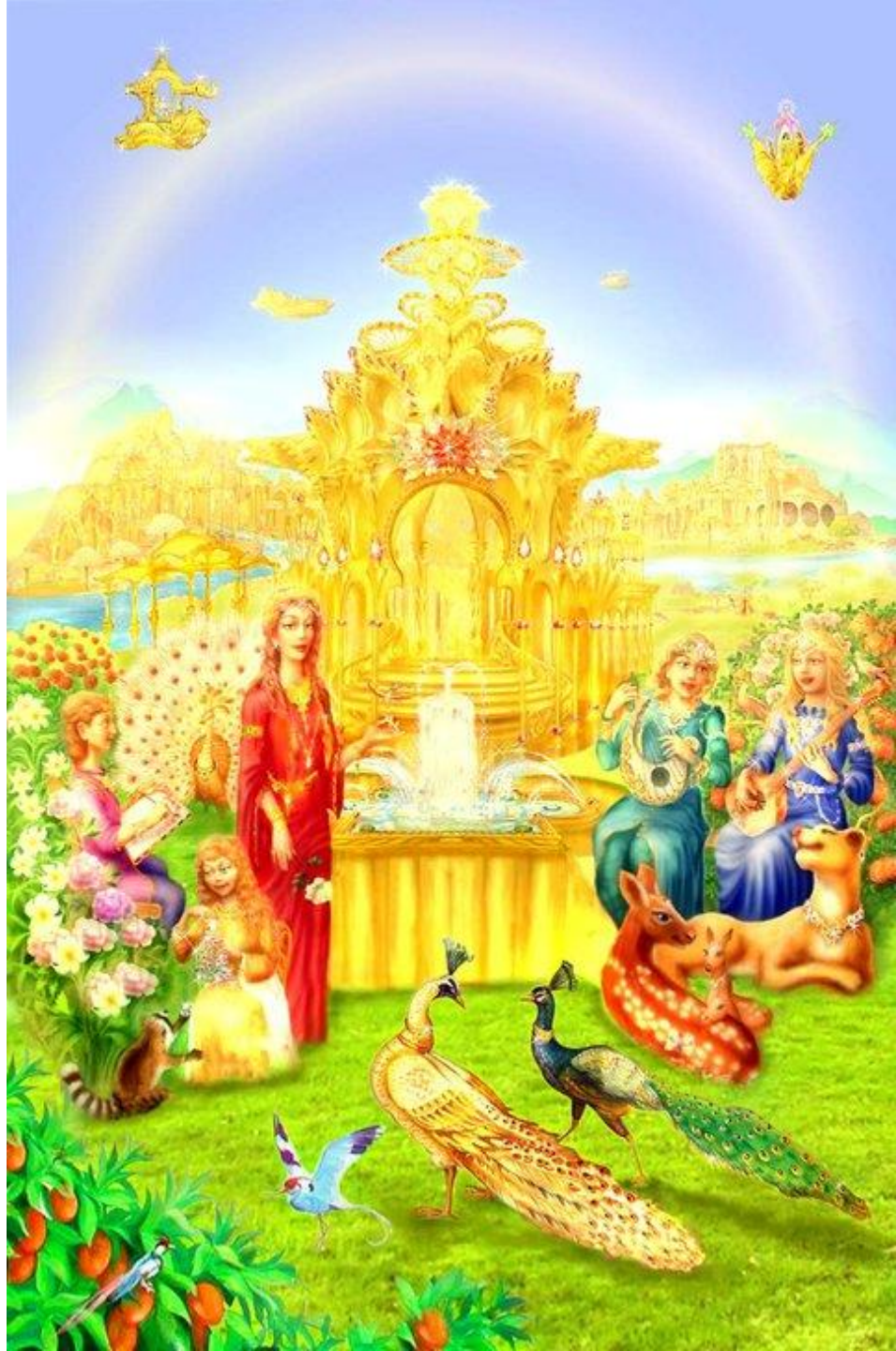

- ✓तुम सब एक माशूक के आशिक बनते हो | आशिक-माशूक जो होते हैं, एक बार एक-दो को देख लिया, बस! शादी आदि भी नहीं करते | रहते भी अलग हैं | परन्तु एक-दो की याद बुद्धि में रहती है | अभी तुम जानते हो हम सब आशिक हैं एक माशूक के | उस माशूक को तुम भक्ति मार्ग में भी बहुत याद करते थे | यहाँ भी तुम्हें बहुत याद करना है, जबकि वह सम्मुख है |
- ✓ ट्रस्टी होकर रहो | बाप तो बैठा है ना | बाप जायेंगे तो सब इकट्ठे जायेंगे अपने घर | फिर तुम चले जायेंगे अपनी राजधानी में |

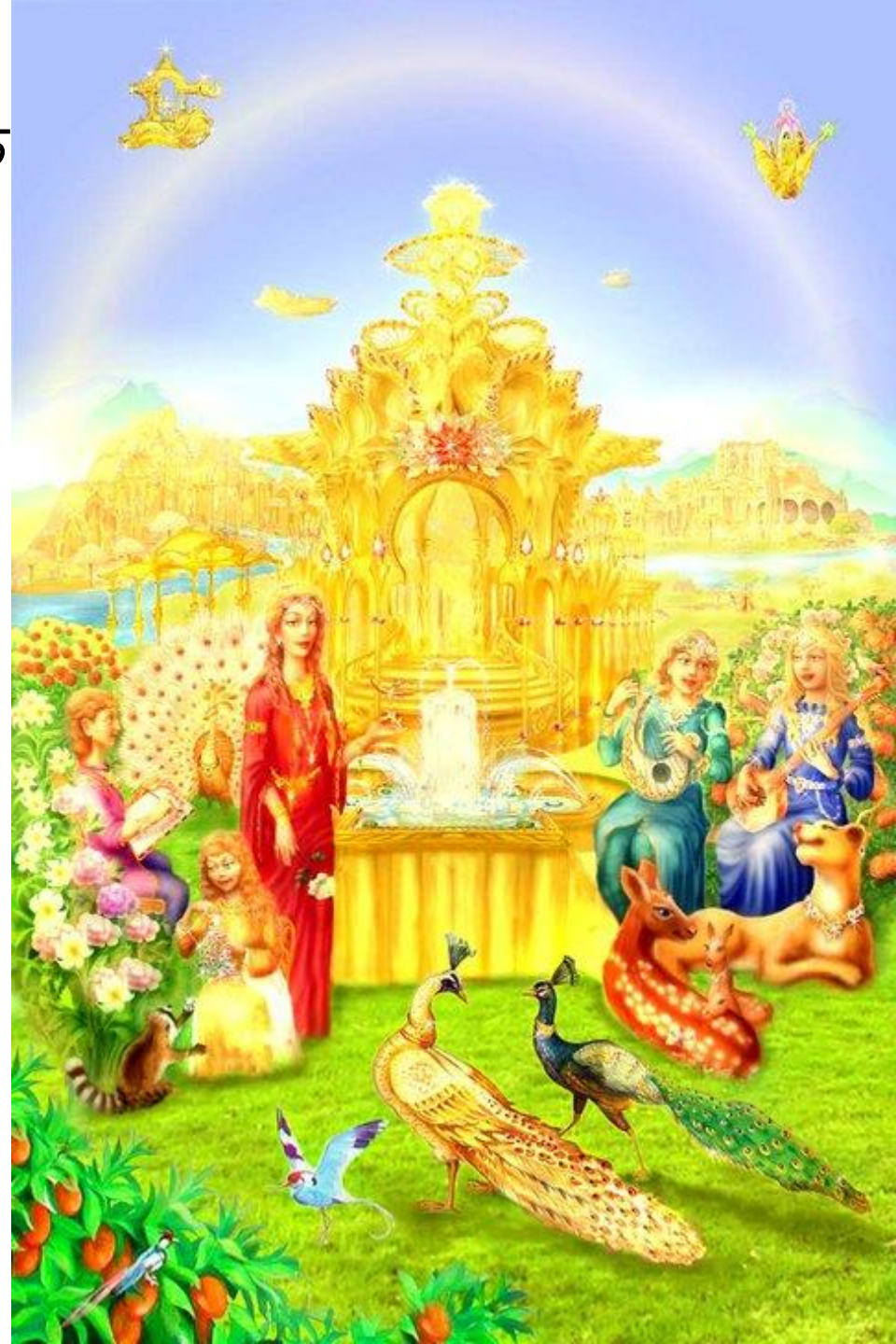

✓यहाँ कोई-कोई बच्चे तो बहुत हड्डी सर्विस करते हैं | सर्विस के लिए जैसे एकदम तड़फते हैं | बहुत मेहनत करते हैं | यह भी तुम जानते हो कि बड़े आदमी इतना नहीं समझ सकेंगे | परन्तु तुम्हारी मेहनत कोई व्यर्थ नहीं जाती है | कोई समझकर लायक बनते हैं, फिर बाबा के आगे आते हैं | तुम समझते हो यह लायक है वा नहीं? दृष्टि तो उन्हों को तुम बच्चों से मिलती है, श्रृंगार करने वाले तुम बच्चे हो | जो भी यहाँ आये हुए हैं, उन सबको तुम बच्चों ने श्रंगार कराया है | बाबा ने तुमको कराया है, तुम फिर औरों को श्रृंगार कराए ले आते हो |

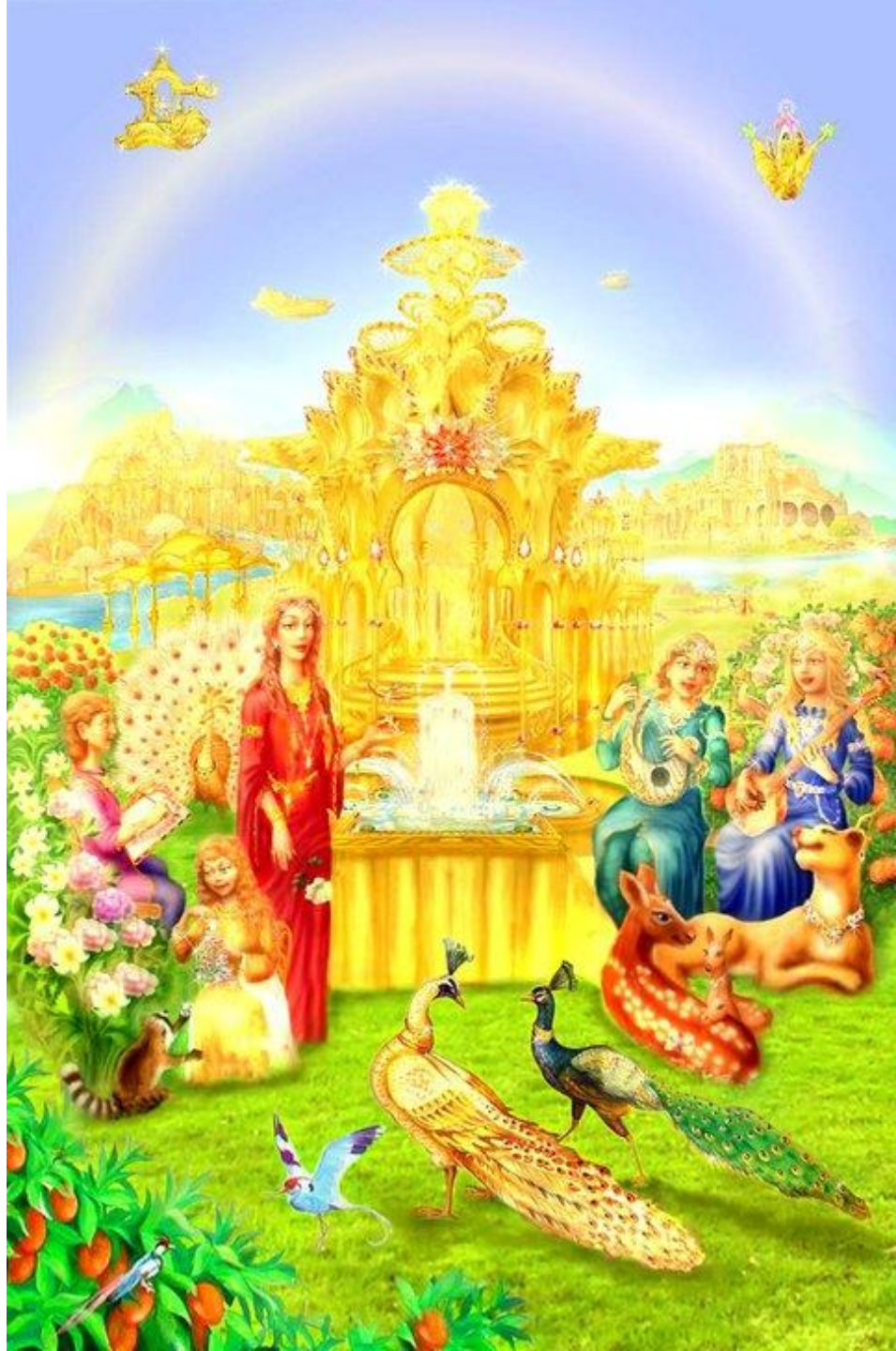

✓अब तुम बच्चे समझते हो हम बाबा को याद करेंगे, फर्स्टक्लास बनेंगे |

✓ अभी तुम समझते हो बाप से हम क्या वर्सा पाते हैं | हम उस पैराडाइज़ के मालिक बन रहे हैं | हेविन को कहा ही जाता है वन्डर ऑफ़ वर्ल्ड | ज़रूर हेविनली गॉड फादर ही हेविन स्थापन करेंगे | अब तुम प्रैक्टिकल में श्रीमत पर अपने लिए स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो | यहाँ तो कितने बड़े-बड़े महल बनाते हैं | यह सब ख़त्म हो जायेंगे |

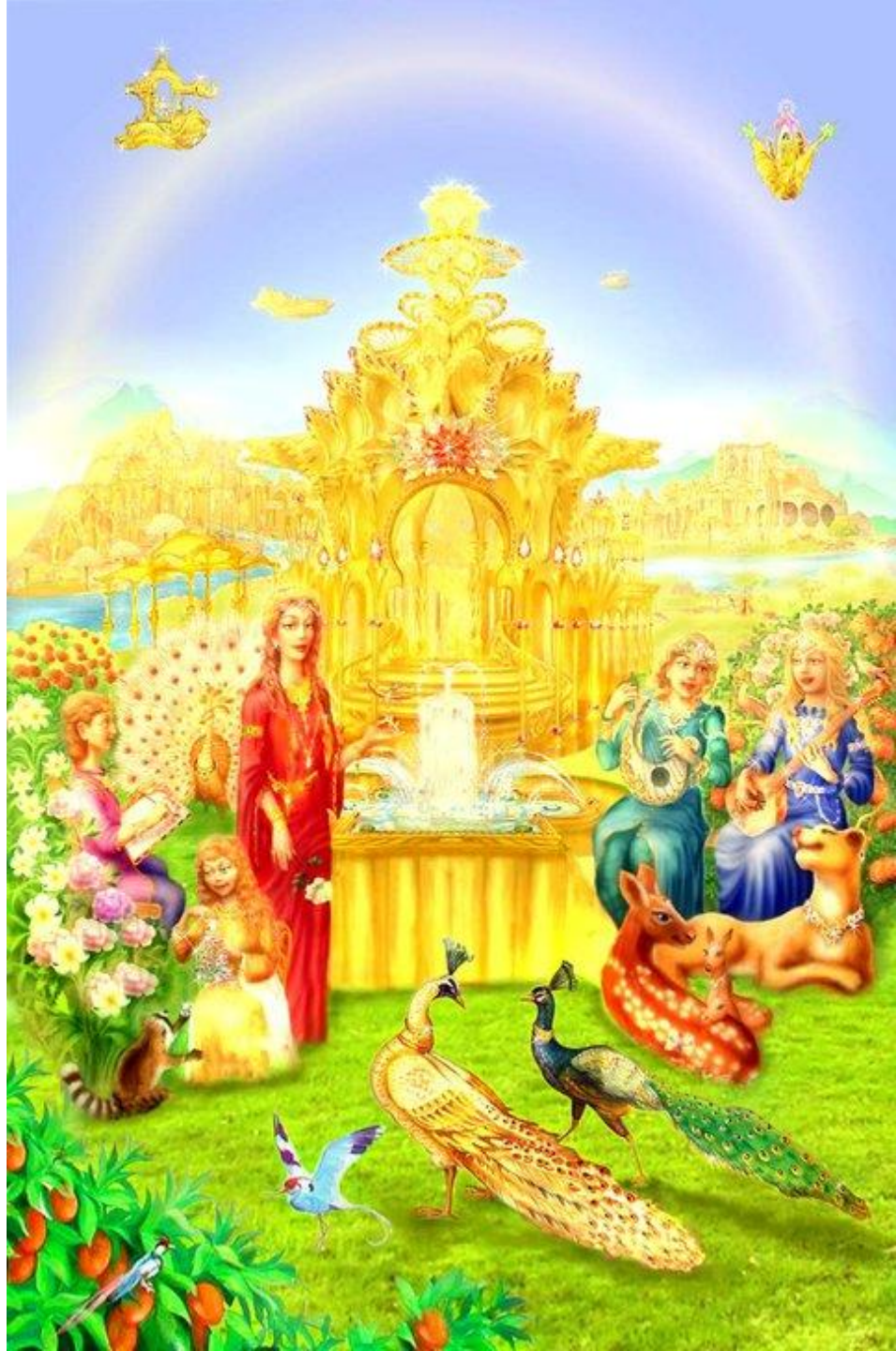

✓ब्राह्मण जीवन में वैराइटी अनुभूतियों द्वारा रमणीकता का अनुभव करने वाले सम्पन्न आत्मा भव

✓अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |